Urdu Devanagari Script: Unlocked Literal Bible for Zechariah

Formatted for Translators

©2022 Wycliffe Associates

Released under a Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Bible Text: The English Unlocked Literal Bible (ULB)

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English Unlocked Literal Bible is based on the unfoldingWord® Literal Text, CC BY-SA 4.0. The original work of the unfoldingWord® Literal Text is available at [https://unfoldingword.bible/ult/](https://nam12.safelinks.protection.outlook.com/?url=https%3A%2F%2Funfoldingword.bible%2Fult%2F&data=02%7C01%7Cmarv_lucas%40wycliffeassociates.org%7Cab3b29dbe7fc44554aeb08d8080e8e70%7C7baa11086adb4be299cf00a4872ab1cf%7C0%7C0%7C637268205914531190&sdata=SW2KxVr%2BcxHGAgMpv602NzoYenorfHi9bOs2SNzVpR4%3D&reserved=0).

The ULB is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Notes: English ULB Translation Notes

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English ULB Translation Notes is based on the unfoldingWord translationNotes, under CC BY-SA 4.0. The original unfoldingWord work is available at <https://unfoldingword.bible/utn>.

The ULB Notes is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

To view a copy of the CC BY-SA 4.0 license visit <http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/>

Below is a human-readable summary of (and not a substitute for) the license.

**You are free to:**

* **Share**— copy and redistribute the material in any medium or format.
* **Adapt**— remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

**Under the following conditions:**

* **Attribution**— You must attribute the work as follows: “Original work available at <https://BibleInEveryLanguage.org>.” Attribution statements in derivative works should not in any way suggest that we endorse you or your use of this work.
* **ShareAlike**— If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.
* **No additional restrictions**— You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

**Notices:**

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.

A picture containing text, clipart

Description automatically generated

TOC \o "1-2" \h \z \uRight-click to update field (doing so will insert table of contents).

Page left intentionally blank

## ज़करियाह

Chapter 1

1~दारा के दूसरे बरस के आठवें महीने में ख़ुदावन्द का कलाम ज़करियाह नबी बिन बरकियाह-बिन-'इददू पर नाज़िल हुआ:2कि ख़ुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा से सख़्त नाराज़ रहा।3इसलिए तू उनसे कह, रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि ~तुम मेरी तरफ़ रुजू' हो, रब्ब-उल-अफ़वाज का फ़रमान है, तो मैं तुम्हारी तरफ़ से रुजू' हूँगा रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।4तुम अपने बाप-दादा की तरह न बनो, जिनसे अगले नबियों ने बा आवाज़-ए- बुलन्द कहा, रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है,कि तुम अपनी बुरे चाल चलन और बद'आमाली से बाज़ आओ; लेकिन उन्होंने न सुना और मुझे न माना, ख़ुदावन्द फ़रमाता है।5तुम्हारे बाप दादा कहाँ हैं? क्या अम्बिया हमेशा ज़िन्दा रहते हैं?6लेकिन मेरा कलाम और मेरे क़ानून, जो मैंने अपने ख़िदमत गुज़ार नबियों को फ़रमाए थे, क्या वह तुम्हारे बाप-दादा पर पूरे नहीं हुए? चुनाँचे उन्होंने रुजू' लाकर कहा,कि रब्ब-उल-अफ़वाज ने अपने इरादे के मुताबिक़ हमारी 'आदात और हमारे 'आमाल का बदला दिया है।"7दारा के दूसरे बरस और ग्यारहवें महीने या'नी माह-ए-सबात की चौबीसवीं तारीख़ को ख़ुदावन्द का कलाम ज़करियाह नबी बिन-बरकियाह-बिन-'इद्दु पर नाज़िल हुआ8कि मैंने रात को रोया में देखा कि एक शख़्स सुरंग घोड़े पर सवार, मेंहदी के दरख़्तों के बीच नशेब में खड़ा था, और उसके पीछे सुरंग और कुमैत और नुक़रह घोड़े थे।9तब मैंने कहा, "ऐ मेरे आक़ा, यह क्या हैं?' इस पर फ़रिश्ते ने, जो मुझ से गुफ़्तगू करता था कहा, 'मैं तुझे दिखाऊँगा कि यह क्या हैं।"10और जो शख़्स मेंहदी के दरख़्तों के बीच खड़ा था, कहने लगा, 'ये वह हैं जिनको ख़ुदावन्द ने भेजा है कि सारी दुनिया में सैर करें।'11और उन्होंने ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते से, जो मेंहदी के दरख़्तों के बीच खड़ा था कहा, "हम ने सारी दुनिया की सैर की है, और देखा कि सारी ज़मीन में अमन-ओ-अमान है।'12~फिर ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने कहा, 'ऐ रब्ब-उल-अफ़वाज तू यरुशलीम और यहूदाह के शहरों पर, जिनसे तू सत्तर बरस से नाराज़ है, कब तक रहम न करेगा?"13और ख़ुदावन्द ने उस फ़रिश्ते को जो मुझ से गुफ़्तगू करता था, मुलायम और तसल्ली बख़्श जवाब दिया।14तब उस फ़रिश्ते ने जो मुझ से गुफ़्तगू करता था, मुझ से कहा, बुलन्द आवाज़ से कह, रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मुझे यरुशलीम और सिय्यून के लिए बड़ी गै़रत है।15और मैं उन क़ौमों से जो आराम में हैं, निहायत नाराज़ हूँ; क्यूँकि जब मैं थोड़ा नाराज़ था, तो उन्होंने उस आफ़त को बहुत ज़्यादा कर दिया।16इसलिए ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मैं रहमत के साथ यरुशलीम को वापस आया हूँ; उसमें मेरा घर ता'मीर किया जाएगा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, और यरुशलीम पर फिर सूत खींचा जाएगा।17फिर बुलन्द आवाज़ से कह, रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: मेरे शहर दोबारा ख़ुशहाली से मा'मूर होंगे, क्यूँकि खुदावन्द फिर सिय्यून को तसल्ली बख़्शेगा, और यरुशलीम को क़ुबूल फ़रमाएगा।18~फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि चार सींग हैं।19और मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से गुफ़्तगू करता था पूछा, कि "यह क्या हैं?" उसने मुझे जवाब दिया, 'यह वह सींग हैं, जिन्होंने यहूदाह और इस्राईल और यरुशलीम को तितर-बितर ~किया है।"20फिर ख़ुदावन्द ने मुझे चार कारीगर दिखाए।21~तब मैंने कहा, "यह क्यूँ आए हैं?" उसने जवाब दिया, 'यह वह सींग हैं, जिन्होंने यहूदाह को ऐसा~तितर-बितर ~किया कि कोई सिर न उठा सका; लेकिन यह इसलिए आए हैं कि उनको डराएँ, और उन क़ौमों के सींगों को पस्त करें जिन्होंने यहूदाह के मुल्क को~तितर-बितर ~करने के लिए सींग उठाया है।"

Chapter 2

1फिर मैने आँख उठाकर निगाह की और क्या देखता हूँ कि एक शख़्स जरीब हाथ में लिए खड़ा है।2और मैंने पूछा, "तू कहाँ जाता है?" उसने मुझे जवाब दिया, यरुशलीम की पैमाइश को, ताकि देखें कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई कितनी है।”3और देखो, वह फ़रिश्ता जो मुझ से गुफ़्तगू करता था। रवाना हुआ, और दूसरा फ़रिश्ता उसके पास आया,4और उससे कहा, "दौड़ और इस जवान से कह, कि यरुशलीम इंसान और हैवान की कसरत के ज़रिए' बेफ़सील बस्तियों की तरह आबाद होगा।5क्यूँकि ख़ुदावन्द फ़रमाता है में उसके लिए चारों तरफ़ आतिशी दीवार हूँगा और उसके अन्दर उसकी शोकत|6"सुनो "ख़ुदावन्द फ़रमाता है, "शिमाल की सर ज़मीन से, जहाँ तुम आसमान की चारों हवाओं की तरह तितर-बितर ~किए गए, निकल भागो, ख़ुदावन्द फ़रमाता है।7ऐ सिय्यून, तू जो दुख़्तर-ए-बाबुल के साथ बसती है, निकल भाग!8क्यूँकि रब्बुल-अफ़वाज जिसने मुझे अपने जलाल की ख़ातिर उन क़ौमों के पास भेजा है, जिन्होंने तुम को ग़ारत किया, यूँ फ़रमाता है, जो कोई तुम को छूता है, मेरी आँख की पुतली को छूता है।9~क्यूँकि देख, मैं उन पर अपना हाथ हिलाऊँगा और वह अपने गु़लामों के लिए लूट होंगे। तब तुम जानोगे कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे भेजा है।10ऐ दुख़्तर-ए-सिय्यून, तू गा और ख़ुशी कर, क्यूँकि देख, मैं आकर तेरे अंदर सुकूनत करूँगा ख़ुदावन्द फ़रमाता है।11और उस वक़्त बहुत सी क़ौमें ख़ुदावन्द से मेल करेंगी और मेरी उम्मत होंगी, और मैं तेरे अंदर सुकूनत करूँगा, तब तू जानेगी कि रब्ब-उल-अफ़वाज ने मुझे तेरे पास भेजा है।12और ख़ुदावन्द यहूदाह को मुल्क-ए-मुक़द्दस में अपनी मीरास का हिस्सा ठहराएगा, और यरुशलीम को क़ुबूल फ़रमाएगा।"13ऐ बनी आदम, ख़ुदावन्द के सामने ख़ामोश रहो, क्यूँकि वह अपने मुक़द्दस घर से उठा है।

Chapter 3

1और उसने मुझे यह दिखाया कि सरदार काहिन यशु' ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते के सामने खड़ा है और शैतान उसके दाहिने हाथ इस्तादा है ताकि उसका सामना करे|2~और ख़ुदावन्द ने शैतान से कहा, "ऐ शैतान, ख़ुदावन्द तुझे मलामत करे! हाँ, वह ख़ुदावन्द जिसने यरुशलीम को क़ुबूल किया है, तुझे मलामत करे ! क्या यह वह लुकटी नहीं जो आग से निकाली गई है?"3और यशू'अ मैले कपड़े पहने फ़रिश्ते के सामने खड़ा था।4फिर उसने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, "इसके मैले कपड़े उतार दो।" और उससे कहा, "देख, मैंने तेरी बदकिरदारी तुझ से दूर की, और मैं तुझे नफ़ीस लिबास पहनाऊँगा।”5और उसने कहा, कि "उसके सिर पर साफ़ 'अमामा रख्खो।" तब उन्होंने उसके सिर पर साफ़ 'अमामा रख्खा और पोशाक पहनाई, और ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता उसके पास खड़ा रहा।6और ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने यशू'अ से ता'कीद करके कहा,7'रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: अगर तू मेरी राहों पर चले और मेरे अहकाम पर 'अमल करे, तो मेरे घर पर हुकूमत करेगा और मेरी बारगाहों का निगहबान होगा; और मैं तुझे इनमें खड़े हैं आने जाने की इजाज़त दूँगा|8अब ऐ यशू'अ सरदार काहिन, सुन, तू और तेरे रफ़ीक़ जो तेरे सामने बैठे हैं, वह इस बात का ईमा हैं कि मैं अपने बन्दे या'नी शाख़ को लाने वाला हूँ।9क्यूँकि उस पत्थर को जो मैंने यशू'अ के सामने रख्खा है, देख, उस पर सात आँखें हैं। देख, मैं इसे तितर-बितर करूँगा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, और मैं इस मुल्क की बदकिरदारी को एक ही दिन में दूर करूँगा।10रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, उसी दिन तुम में से हर एक अपने हम साये को ताक और अंजीर के नीचे बुलाएगा।"

Chapter 4

1और वह फ़रिश्ता जो मुझ से बातें करता था, फिर आया और उसने जैसे मुझे नींद से जगा दिया,2और पूछा, "तू क्या देखता है?" और मैंने कहा, कि "मैं एक सोने का शमा'दान देखता हूँ जिसके सिर पर एक कटोरा है और उसके ऊपर सात चिराग़ हैं, और उन सातों चिराग़ों पर उनकी सात सात नलियाँ।3और उसके पास ज़ेतून के दो दरख़्त हैं, एक तो कटोरे की दहनी तरफ़ और दूसरा बाई तरफ़।”4और मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पूछा, "ऐ मेरे आक़ा, यह क्या हैं?"5तब उस फ़रिश्ते ने जो मुझ से कलाम करता था कहा, "क्या तू नहीं जानता यह क्या है?" मैंने कहा, ‘नहीं, ऐ मेरे आक़ा।”6तब उसने मुझे जवाब दिया, कि यह ज़रुब्बाबुल के लिए ख़ुदावन्द का कलाम है: कि न तो ताक़त से, और न तवानाई से, बल्कि मेरी रूह से, रब्बु-ल-अफ़वाज फ़रमाता है।7ऐ बड़े पहाड़, तू क्या है? तू ज़रुब्बाबुल के सामने मैदान हो जाएगा, और जब वह चोटी का पत्थर निकाल लाएगा, तो लोग पुकारेंगे, कि उस पर फ़ज़ल हो फ़ज़ल हो |8फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,9कि ज़रुब्बाबुल के हाथों ने इस घर की नींव डाली, और उसी के हाथ इसे तमाम भी करेंगे। तब तू जानेगा कि रब्ब-उल-अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।10क्यूँकि कौन है जिसने छोटी चीज़ों के दिन की तहक़ीर की है? "क्यूँकि ख़ुदावन्द की वह सात आँखें, जो सारी ज़मीन की सैर करती हैं, खुशी से उस साहूल को देखती हैं जो ज़रुब्बाबुल के हाथ में है।"11तब मैंने उससे पूछा, कि यह दोनों ज़ैतून के दरख़्त जो शमा'दान के दहने बाएँ हैं, क्या हैं?"12और मैंने दोबारा उससे पूछा, कि ज़ैतून की यह दो शाख़ क्या हैं, जो सोने की दो नलियों के मुत्तसिल हैं, जिनकी राह से सुन्हेला तेल निकला चला जाता है?"13उसने मुझे जवाब दिया, "क्या तू नहीं जानता, यह क्या हैं?” मैंने कहा, "नहीं, ऐ मेरे आक़ा।"14उसने कहा, 'यह वह दो मम्सूह हैं, जो रब्ब-उल-'आलमीन के सामने खड़े रहते हैं।"

Chapter 5

1फिर मैंने आँख उठाकर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि एक उड़ता हुआ तूमार है।2उसने मुझ से पूछा, "तू क्या देखता है, मैंने जवाब दिया एक उड़ता हुआ तूमार देखता हूँ, जिसकी लम्बाई बीस और चौड़ाई दस हाथ है।”3फिर उसने मुझ से कहा, "यह वह ला'नत है जो तमाम मुल्क पर नाज़िल' होने को है, और इसके मुताबिक़ हर एक चोर और झूठी क़सम खाने वाला यहाँ से काट डाला जाएगा।4रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, मैं उसे भेजता हूँ, और वह चोर के घर में और उसके घर में, जो मेरे नाम की झूठी क़सम खाता है, घुसेगा और उसके घर में रहेगा; और उसे उसकी लकड़ी और पत्थर के साथ बर्बाद करेगा।"5वह फिर फ़रिश्ता जो मुझ से कलाम करता था निकला, और उसने मुझ से कहा, कि "अब तू आँख उठाकर देख, क्या निकल रहा है?”6मैंने पूछा, "यह क्या है?" उसने जवाब दिया, ~"यह एक ऐफ़ा निकल रहा है।” और उसने कहा, कि तमाम मुल्क में यही उनकी शबीह है।"7और सीसे का एक गोल सरपोश उठाया गया, और एक 'औरत ऐफ़ा में बैठी नज़र आई!8और उसने कहा, कि यह शरारत है।" और उसने उसको ऐफ़ा में नीचे दबाकर, सीसे के उस सरपोश को ऐफ़ा के मुँह पर रख दिया।9फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि दो 'औरतें निकल आई और हवा उनके बाजू़ओं में भरी थी, क्यूँकि उनके लक़लक़ के से बा'ज़ु थे, और वह ऐफ़ा की आसमान और ज़मीन के बीच उठा ले गई।10तब मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पूछा, कि "यह ऐफ़ा को कहाँ लिए जाती हैं?"11उसने मुझे जवाब दिया कि "सिन'आर के मुल्क को, ताकि इसके लिए घर बनाएँ, और जब वह तैयार हो तो यह अपनी जगह में रख्खी जाए।”

Chapter 6

1तब फिर मैंने ऑख उठाकर निगाह की तो क्या देखता हूँ कि दो पहाड़ों के बीच ~से चार रथ निकले, और वह पहाड़ पीतल के थे।2पहले रथ के घोड़े सुरंग, ~दूसरे के मुशकी ,3तीसरे के नुक़रा और चौथे के अबलक़ थे।4तब मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था पूछा, "ऐ मेरे आक़ा, यह क्या हैं?"5और फ़रिश्ते ने मुझे जवाब दिया, कि 'यह आसमान की चार हवाएँ हैं' जो रब्बुल-'आलमीन के सामने से निकली हैं।6और मुशकी घोड़ों वाला रथ उत्तरी मुल्क को निकला चला जाता है, और नुकरा घोड़ों वाला उसके पीछे और अबलक़ घोड़ों वाला दक्खिनी मुल्क को।”7और सुरंग घोड़ों वाला भी निकला, और उन्होंने चाहा कि दुनिया की सैर करें; और उसने उनसे कहा, "जाओ, दुनिया की सैर करो।” और उन्होंने दुनिया की सैर की।8तब उसने बुलन्द आवाज़ से मुझ से कहा, "देख, जो उत्तरी मुल्क को गए हैं, उन्होंने वहाँ मेरा जी ठंडा किया है।”9फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ :10कि तू आज ही ख़ल्दी और तूबियाह और यद'अयाह के पास जा, जो बाबुल के ग़ुलामों की तरफ़ से आकर यूसियाह-बिन-सफ़निया के घर में उतरे हैं।11और उनसे सोना-चाँदी लेकर ताज बना, और यशू'अबिन-यहूसदक़ सरदार काहिन को पहना;12और उससे कह, 'कि रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, कि देख, वह शख्स जिसका नाम शाख़ है, उसके ज़ेर-ए-साया ख़ुशहाली होगी और वह ख़ुदावन्द की हैकल को ता'मीर करेगा।13हाँ, वही ख़ुदावन्द की हैकल को बनाएगा और वह साहिब-ए-शौकत होगा, और तख़्त नशीन होकर हुकूमत करेगा और उसके साथ काहिन भी तख़्त नशीन होगा; और दोनों में सुलह-ओ-सलामती की मशवरत होगी।'14और यह ताज हीलम और तूबियाह और यद'अयाह और हेन-बिन-सफ़नियाह के लिए ख़ुदावन्द की हैकल में यादगार होगा।15और वह जो दूर हैं आकर ख़ुदावन्द की हैकल को ता'मीर करेंगे, तब तुम जानोगे कि रब्बु -उल-अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है; और अगर तुम दिल से ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की फ़रमाबरदारी करोगे तो यह बातें पूरी होंगी।"

Chapter 7

1दारा बादशाह की सल्तनत के चौथे बरस के नवें महीने, या'नी किसलेव महीने की चौथी तारीख़ को ख़ुदावन्द का कलाम ज़करियाह पर नाज़िल हुआ।2और बैतएल के बाशिन्दों ने शराज़र और रजममलिक और उसके लोगों को भेजा कि ख़ुदावन्द से दरख़्वास्त करें,3और रब्ब-उल-अफ़वाज के घर के काहिनों और नबियों से पूछे, कि "क्या मैं पाँचवें महीने में गोशानशीन होकर मातम करूँ, जैसा कि मैंने सालहाँ साल से किया है?"4तब रब्ब-उल-अफ़वाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ :5कि मम्लुकत के सब लोगों और काहिनों से कह कि जब तुम ने पाँचवें और सातवें महीने में, इन सत्तर बरस तक रोज़ा रख्खा और मातम किया, तो क्या था कभी मेरे लिए ख़ास मेरे ही लिए रोज़ा रख्खा था?6और जब तुम खाते-पीते थे तो अपने ही लिए न खाते-पीते थे?7क्या यह वही कलाम नहीं जो ख़ुदावन्द ने गुज़िश्ता नबियों की मा'रिफ़त फ़रमाया, जब यरुशलीम आबाद और आसूदा हाल था, और उसके 'इलाक़े के शहर और दक्खिन की सर ज़मीन और सैदान आबाद थे?"8फिर ख़ुदावन्द का कलाम जक़रियाह पर नाज़िल हुआ :9कि रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाया था, कि रास्ती से 'अदालत करो, और हर शख़्स अपने भाई पर करम और रहम किया करे,10और बेवा और यतीम और मुसाफ़िर और मिस्कीन पर ज़ुल्म न करो, और तुम में से कोई अपने भाई के ख़िलाफ़ दिल में बुरा मन्सूबा न बाँधे।"11~लेकिन वह सुनने वाले न हुए, बल्कि उन्होंने गर्दनकशी की तरफ़ अपने कानों को बंद किया ताकि न सुनें।12और उन्होंने अपने दिलों को अल्मास की तरह सख़्त किया, ताकि शरी'अत और उस कलाम को न सुनें जो रब्बुल-अफ़वाज ने गुज़िश्ता नबियों पर अपने रूह की मा'रिफ़त नाज़िल फ़रमाया था। इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज की तरफ़ से क़हर-ए-शदीद नाज़िल हुआ।13और रब्ब-उल-अफ़वाज ने फ़रमाया था: "जिस तरह मैंने पुकार कर कहा और वह सुनने वाले न हुए, उसी तरह वह पुकारेंगे और मैं नहीं सुनूँगा।14बल्कि उनको सब क़ौमों में जिनसे वह नावाक़िफ़ हैं तितर-बितर ~करूँगा। यूँ उनके बा'द मुल्क वीरान हुआ, यहाँ तक कि किसी ने उसमें आमद-ओ-रफ़्त न की, क्यूँकि उन्होंने उस दिलकुशा मुल्क को वीरान कर दिया।”

Chapter 8

1फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ :2कि रब्ब-उल-अफ़्वाज़ यूँ फ़रमाता है कि मुझे सिय्यून के लिए बड़ी गै़रत है बल्कि मैं गै़रत से सख़्त ग़ज़बनाक हुआ3ख़ुदावन्द यु फ़रमात है कि मैं सिय्यून में वापस आया हुआ और यरुशलीम में सकूनत करूँगा और यरुशलीम शहर-ए-सिदक़ होगा और रब्ब-उल-अफ़्वाज़ का पहाड़ कोहे मुक़द्दस कहलाएगा4रब्बु-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि यरुशलीम के गलियों में 'उम्र रसीदा मर्द-ओ- ज़न बुढ़ापे की वजह से हाथ में 'असा लिए हुए फिर बैठे होंगे।5~और शहर की गलियों में खेलने वाले लड़के-लड़कियों से मा'मूर होंगे।6और रब्ब-उल-अफवाज यूँ फ़रमाता है कि अगरचे उन दिनों में यह 'अम्र इन लोगों के बक़िये की नज़र में हैरत अफ़ज़ा हो, तोभी क्या मेरी नज़र में हैरत अफ़ज़ा होगा? रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।7रब्ब उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: देख, मैं अपने लोगों को पूरबी और पश्चिमी ममालिक से छुड़ा लूगा।8और मैं उनको वापस लाऊँगा और वह यरुशलीम में सुकूनत करेंगे, और वह मेरे लोग होंगे और मैं रास्ती-और -सदाक़त से उनका ख़ुदा हूँगा।"9रब्बु-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: "कि ऐ लोगो, अपने हाथों को मज़बूत करो; तुम जो इस वक़्त यह कलाम सुनते हो, जो रब्ब उल-अफ़वाज के घर या'नी हैकल की ता'मीर के लिए बुन्नियाद डालते वक़्त नबियों के ज़रिए' नाज़िल हुआ।10क्यूँकि उन दिनों से पहले, न इंसान के लिए मज़दूरी थी और न हैवान का किराया था, और दुश्मन की वजह से आने-जाने वाले महफू़ज़ न थे, क्यूँकि मैंने सब लोगों में निफ़ाक डाल दिया।11लेकिन अब मैं इन लोगों के बक़िये के साथ पहले की तरह पेश न आऊँगा, रब्बुल-उल-अफ़वाज फ़रमाता है|12बल्कि ज़िरा'अत सलामती से होगी, अपना फल देगी और ज़मीन अपना हासिल और आसमान से ओस पड़ेगी, मैं इन लोगों के बकिये को इन सब बरकतों का वारिस बनाऊँगा।13ऐ बनी यहूदाह और ऐ बनी-इस्राईल, तरह तुम दूसरी क़ौमों में ला'नत तरह मैं तुम को छुड़ाऊँगा और तुम बरकत होगे। परेशान न हो, तुम्हारे हाथ मज़बूत हों।"14क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि "जिस तरह मैंने क़स्द किया था कि तुम पर आफ़त लाऊँ, तुम्हारे बाप-दादा ने मुझे ग़ज़बनाक किया और मैं अपने इरादे से बाज़ न रहा, फ़रमाता है;15उसी तरह मैंने अब इरादा किया है कि यरुशलीम और यहूदाह के घराने से नेकी करूँ; लेकिन तुम परेशान न हो।16~फ़िर लाज़िम है कि तुम इन बातों पर 'अमल करो। तुम सब अपने पड़ौसियों से सच बोलो, अपने फाटकों में रास्ती से करो ताकि सलामती हो,17और तुम में से कोई अपने भाई के ख़िलाफ़ दिल में बुरा मंसूबा न बाँधे, झूटी क़सम को 'अज़ीज़ न रख्खे; मैं इन सब बातों से नफ़रत रखता हूँ ख़ुदावन्द फ़रमाता है |18फिर रब्ब-उल-अफ़वाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:19~कि रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि चौथे और पाँचवें और सातवें और दसवें महीने का रोज़ा , यहूदाह के लिए खुशी और ख़ुर्रमी का दिन और शादमानी की 'ईद होगा; तुम सच्चाई और सलामती को 'अज़ीज़ रक्खो|20रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि फिर क़ौम में और बड़े बड़े शहरों के बाशिन्दे ~आएँगे।21एक शहर के बाशिन्दे दूसरे शहर में जाकर कहेंगे, जल्द ख़ुदावन्द से दरख़्वास्त करें और रब्ब-उल-अफ़वाज के तालिब हों, भी चलता हूँ।'22बहुत सी उम्मातें और ज़बरदस्त क़ौमें रब्ब-उल-अफ्वाज की तालिब होंगी, ख़ुदावन्द से दरख़्वास्त करने को यरुशलीम में आएँगी।23~रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि उन दिनों में मुख़्तलिफ़ अहल-ए-लुग़त में से दस आदमी हाथ बढ़ाकर एक यहूदी का दामन पकड़ेंगे और कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ जायेंगे क्यूँकि हम ने सुना है कि ख़ुदा तुम्हारे साथ है।'

Chapter 9

1बनी आदम और ख़ुसूसन कुल क़बाइल- ए-इस्राईल की आँखें ख़ुदावन्द पर लगी हैं। ख़ुदावन्द की तरफ़ से सर ज़मीन-ए- और दमिश्क़ के ख़िलाफ़ बार-ए-नबूव्वत;2हमात के खिलाफ़ जो उनसे सूर और सैदा के खिलाफ़ जो अपनी नज़र में बहुत 'अक़्लमन्द हैं।3~सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला' मिट्टी की तरह चाँदी के तूदे लगाए और गलियों की कीच की तरह सोने के ढेर।4~देखो ख़ुदावन्द उसे ख़ारिज कर देगा, उसके ग़ुरूर को समुन्दर में डाल देगा: और आग उसको खा जाएगी।5~अस्क़लोन देखकर डर जाएगा ग़ज़्ज़ा भी सख़्त दर्द में मुब्तिला होगा, 'अक्रून भी क्यूँकि उसकी उम्मीद टूट गई और ग़ज़्ज़ा से बादशाही जाती रहेगी,अस्क़लोन~बे चिराग़ हो जाएगा। ~6और एक अजनबी ज़ादा अशदूद में तख़्त नशीन होगा और मैं ~फ़िलिस्तियों का ग़ुरूर मिटाऊँगा।7~और मैं उसके खू़न को उसके मुँह से और उसकी मकरूहात उसके दाँतों से निकाल डाललूँगा, और वह भी हमारे ख़ुदा के लिए बक़िया होगा और वह यहूदाह में सरदार होगा और 'अक्रूनी यबूसियों की तरह होंगे।8~और मैं मुख़ालिफ़ फ़ौज के मुक़ाबिल अपने घर की चारों तरफ़ खै़माज़न हूँगा ताकि कोई उसमें से आमद-ओ-रफ़्त न कर सके; फिर कोई ज़ालिम उनके बीच से न गुज़रेगा क्यूँकि अब मैंने अपनी आँखों से देख लिया है।9ऐ बिन्त-ए-सिय्यून तू निहायत शादमान हो! ऐ दुख़्तर-ए-यरुशलीम, ख़ूब ललकार क्यूँकि देख तेरा बादशाह तेरे पास आता है; वह सादिक है, नजात उसके हाथ में है वह हलीम है और गधे पर बल्कि जवान गधे पर सवार है।10और मैं इफ़्राईम से रथ, यरुशलीम से घोड़े काट डालूँगा और जंगी कमान तोड़ डाली जाएगी और वह क़ौमों को सुलह का मुज़दा देगा और उसकी सल्तनत समुन्दर से समन्दर तक और दरिया-ए-फ़ुरात से इन्तिहाए-ज़मीन तक होगी।;11~और तेरे बारे में यूँ है कि तेरे 'अहद के खू़न की वजह से, तेरे ग़ुलामों को अंधे कुंए से निकाल लाया।12मैं आज बताता हूँ कि तुझ को दो बदला दूँगा, ऐ उम्मीदवार, ग़ुलामों क़िले' वापस आओ।"13क्यूँकि मैंने यहूदाह को कमान की तरह झुकाया और इफ़्राईम को तीर की तरह लगाया, और ऐ सिय्यून, मैं तेरे फ़र्ज़न्दों को यूनान के फ़र्ज़न्दों के ख़िलाफ़ बरअन्गेख़ता करूँगा, तुझे पहलवान की तलवार की तरह बनाऊँगा।14और ख़ुदावन्द उनके ऊपर दिखाई देगा उसके तीर बिजली की तरह निकलेंगे; हाँ ख़ुदावन्द ख़ुदा नरसिंगा फूँकेगा और दक्खिनी बगोलों के साथ खुरूज करेगा |15और रब्ब-उल-अफ़वाज उनकी हिमायत करेगा और वह दुश्मनों को निगलेंगे,और फ़लाख़न के पत्थरों को पायमाल करेंगे और पीकर मतवालों की तरह शोर मचायेंगे और कटोरों और मज़बह के कोनों की तरह मा'मूर होंगे।16और ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा उस दिन उनको अपनी भेंड़ों की तरह बचा लेगा, क्यूँकि वह ताज के जवाहर की तरह होंगे, जो उसके मुल्क में सरफ़राज़17~क्यूँकि उनकी खुशहाली 'अज़ीम और उनका जमाल खू़ब है, नौजवान ग़ल्ले से बढ़ेंगे और लड़कियाँ नई शराब से नश्व-ओ-नुमा पाएँगी|

Chapter 10

1पिछली बरसात की बारिश के लिए ख़ुदावन्द से दू'आ करो ख़ुदावन्द से जो बिजली चमकाता है वह बारिश भेजेगा और मैदान में सबके लिए घास उगाएगा |2क्यूँकि तराफीम ने बतालत की बातें कहीं हैं और गै़बबीनों ने बतालत देखी और झूठे ख़्वाब बयान किये हैं उनकी तसल्ली बे हक़ीक़त है ~इसलिए वह भेड़ों की तरह भटक गए। उन्होंने दुख पाया क्यूँकि उनका कोई चरवाहा न था।3~मेरा ग़ज़ब चरवाहों पर भड़का है, मैं पेशवाओं को सज़ा दूँगा; तोभी रब्ब-उल-अफ़वाज ने अपने गल्ले या'नी बनी यहूदाह पर नज़र की है, उनको गोया अपना खू़बसूरत जंगी घोड़ा बनाएगा।4उन्ही में से कोने का पत्थर और खूंटी जंगी कमान और सब हाकिम निकलेंगे।5और वह पहलवानों की तरह लड़ाई में दुश्मनों को गलियों की कीच की तरह लताड़ेंगे और वह लड़ेंगे, क्यूँकि ख़ुदावन्द उनके साथ हैं और सवार सरासीमा हो जाएँगे।6और मैं यहूदाह के घराने की तकवियत करूँगा और यूसुफ़ के घराने को रिहाई बख़्शूँगा और उनको वापस लाऊँगा,क्यूँकि मैं उन पर रहम करता हूँ, वह ऐसे होंगे गोया मैंने कभी उनको तर्क नहीं किया था, मैं ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हूँ और उनकी सुनूँगा।7~और बनी इफ़्राईम पहलवानों की तरह होंगे और उनके दिल गोया मय से मसरूर होंगे, बल्कि उनकी औलाद भी देखेगीऔर शादमानी करेगी; उनके दिल ख़ुदावन्द से ख़ुश होंगे।8~मैं सीटी बजाकर उनको इकठ्ठा करूँगा, क्यूँकि मैंने उनका फ़िदिया दिया है; वह बहुत हो जाएँगे जैसे पहले9~अगरचे मैंने उन्हें क़ौमों में तितर-बितर किया तोभी वह उन दूर के मुल्कों में मुझे याद करेंगे और अपने बाल बच्चों साथ ज़िन्दा रहेंगे और वापस आएँगे।10~मैं उनको मुल्क-ए-मिस्र से वापस लाऊँगा असूर से जमा' करूँगा और जिल'आद और लुबनान की सरज़मीन में पहुँचाऊँगा,यहाँ तक कि उनके लिए गुंजाइश न होगी।11~और वह मुसीबत के समुन्दर से गुज़र जाएगा और उसकी लहरों को मारेगा, और दरया-ए-नील तक सूख जाएगा, असूर का तकब्बुर टूट जाएगा और मिस्र का 'असा जाता रहेगा।12~और मैं उनको ख़ुदावन्द में तक़वियत बख़्शूँगा और वह उसका नाम लेकर इधर उधर चलेंगे।”~

Chapter 11

1ऐ ~लुबनान, तू अपने दरवाज़ों को खोलदे ताकि आग तेरे देवदारों को खा जाए।2ऐ सरो के दरख़्त, नौहा कर क्यूँकि देवदार गिर गया, शानदार गारत हो गए। ऐ बसनी बलूत के दरख़्तो, फ़ुगां करो क्यूँकि दुशवार गुज़ार जंगल साफ़ हो3चरवाहों के नौहे की आवाज़ आती है, क्यूँकि उनकी हशमत ग़ारत हुई! जवान बबरों की गरज़ सुनाई देती है क्यूँकि यरदन का जंगल बर्बाद हो गया!4~ख़ुदावन्द मेरा ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: "कि जो भेड़ें ज़बह हो रही हैं उनको चरा|5~जिनके मालिक उनको ज़बह करते और अपने आप को बेक़ुसूर समझते हैं, और जिनके बेचने वाले कहते हैं,ख़ुदावन्द का शुक्र हो कि हम मालदार हुए," और उनके चरवाहे उन पर रहम नहीं करते |6~क्यूँकि ख़ुदावन्द फ़रमाता है, मुल्क के बाशिन्दों पर फिर रहम नहीं करूँगा, बल्कि हर शख़्स को उसके हमसाये और उसके बादशाह के हवाले कर दूँगा; वह मुल्क को तबाह करेंगे और मैं उनको उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा|7~तब मैंने उन भेड़ों को जो ज़बह हो रही थीं, या'नी गल्ले के मिस्कीनों को चराया और मैंने दो लाठियाँ लीं; एक का नाम फ़ज़ल रख्खा और दूसरी का इत्तिहाद,और गल्ले को चराया।8और मैंने एक महीने में तीन चरवाहों को हलाक किया, क्यूँकि मेरी जान उनसे बेज़ार थी; उनके दिल में मुझ से कराहियत थी |9तब मैंने कहा, "कि अब मैं तुम को न चराऊँगा। मरने वाला मरजाए और हलाक होने वाला हलाक हो, बाक़ी एक दूसरे का गोश्त खाएँ।10~तब मैंने फ़ज़ल नामी लाठी को लिया और उसे काट डाला कि अपने 'अहद को जो मैंने सब लोगों से बाँधा था, मन्सूख़ करूँ।11और वह उसी दिन मन्सूख़ हो गया; तब गल्ले के मिस्कीनों ने जो मेरी सुनते थे, मा'लूम किया कि यह ख़ुदावन्द का कलाम है;12और मैंने उनसे कहा,कि "अगर तुम्हारी नज़र में ठीक हो, तो मेरी मज़दूरी मुझे दो नहीं तो मत दो।" और उन्होंने मेरी मज़दूरी के लिए तीस रुपये तोल कर दिए।13और ख़ुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया, कि "उसे कुम्हार के सामने फेंक दे," या'नी इस बड़ी क़ीमत को जो उन्होंने मेरे लिए ठहराई, और मैंने यह तीस रुपये लेकर ख़ुदावन्द के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए।14तब मैंने दूसरी लाठी या'नी इत्तिहाद नामी को काट डाला, ताकि उस बिरादरी को जो यहूदाह और इस्राईल में है ख़त्म करूँ15और ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि "तू फिर नादान चरवाहे का सामान ले।16~क्यूँकि देख, मैं मुल्क में ऐसा चौपान बर्पा करूँगा, जो हलाक होने वाले की ख़बर गीरी, और भटके हुए की तलाश और ज़ख़्मी का 'इलाज न करेगा, और तन्दुरुस्त को न चराएगा लेकिन मोटों का गोश्त खाएगा,और उनके खुरों को तोड़ डालेगा।17उस नाबकार चरवाहे पर अफ़सोस,जो ग़ल्ले को छोड़ जाता है, तलवार उसके बाजू़ और उसकी दहनी आँख पर आ पड़ेगी। उसका बाजू़ बिल्कुल सूख जाएगा और उसकी दहनी आँख फूट जाएगी।”

Chapter 12

1~इस्राईल के बारे में ख़ुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुव्वत: ख़ुदावन्द जो आसमान को तानता और ज़मीन की नियु डालता और इंसान के अन्दर उसकी रूह पैदा करता है, यूँ फ़रमाता है :2देखो, मैं यरुशलीम को चारों तरफ़ के सब लोगों के लिए लड़खड़ाहट का प्याला बनाऊँगा, और यरुशलीम के मुहासिरे के वक़्त यहूदाह का भी यही हाल होगा।3और मैं उस दिन यरुशलीम को सब क़ौमों के लिए एक भारी पत्थर बना दूँगा, और जो उसे उठाएँगे सब घायल होंगे, और दुनिया की सब क़ौमें उसके सामने जमा' होंगी।4ख़ुदावन्द फ़रमाता है, मैं उस दिन हर घोड़े को हैरतज़दा और उसके सवार को दीवाना कर दूँगा, लेकिन यहूदाह के घराने पर निगाह रख्खूँगा, और क़ौमों के सब घोड़ों को अंधा कर दूँगा।5तब यहूदाह के फ़रमारवाँ दिल में कहेंगे, कि 'यरुशलीम के बाशिन्दे अपने ख़ुदा रब्ब-उल-अफ़वाज की वजह से हमारी ताक़त हैं।'6मैं उस दिन यहूदाह के फ़रमारवाओं को लकड़ियों में जलती अंगेठी और पूलों में मश'अल की तरह बनाऊँगा, और वह दहने बाएँ चारों तरफ़ की सब क़ौमों को खा जाएँगे, और अहल-ए-यरुशलीम फिर अपने मक़ाम पर यरुशलीम में ही आबाद होंगे।7और ख़ुदावन्द यहूदाह के ख़ैमों को पहले रिहाई बख़्शेगा, ताकि दाउद का घराना और यरुशलीम के बाशिन्दे यहूदाह के ख़िलाफ़ ग़ुरूर न करें।8उस दिन ख़ुदावन्द यरुशलीम के बाशिन्दों की हिमायत करेगा, और उनमें का सबसे कमज़ोर उस दिन दाऊद की तरह होगा; और दाऊद का घराना ख़ुदा की तरह , या'नी ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते की तरह जो उनके आगे आगे चलता हो।9और मैं उस दिन यरुशलीम की सब मुख़ालिफ़ क़ौमों की हलाकत का क़सद करूँगा।10और मैं दाऊद के घराने और यरुशलीम के बाशिन्दों पर फ़ज़ल और मुनाजात की रूह नाज़िल करूँगा, और वह उस पर जिसको उन्होंने छेदा है नज़र करेंगे और उसके लिए मातम करेंगे जैसा कौई अपने एकलौते के लिए करता है और उसके लिए तल्ख़ काम होंगे जैसे कोई अपने पहलौठे के लिए होता है |11और उस दिन यरुशलीम में बड़ा मातम होगा, हदद रिम्मोन के मातम की तरह जो मजिहोन की वादी में हुआ|12और तमाम मुल्क मातम करेगा, हर एक घराना अलग; दाऊद का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; नातन का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग;13~लावी का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; सिम'ई का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग;14बाक़ी सब घराने अलग-अलग, और उनकी बीवियाँ अलग अलग !'

Chapter 13

1उस रोज़ गुनाह और नापाकी धोने को दाऊद के घराने और यरुशलीम के बशिन्दों के लिए एक सोता फूट निकले गा2और रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, मैं उसी दिन मुल्क से बुतों का नाम मिटा दूँगा, और उनको फिर कोई याद न करेगा; और मैं नबियों को और नापाक रूह को मुल्क से ख़ारिज कर दूँगा।3और जब कोई नबुव्वत करेगा, तो उसके माँ-बाप जिनसे वह पैदा हुआ उससे कहेंगे तू ज़िन्दा न रहेगा क्यूँकि तू ख़ुदावन्द का नाम लेकर झूठ बोलता है और जब एह नबुव्वत करेगा तो उसके माँ बाप जिनसे वह पैदा हुआ छेद डालेगें |4और उस दिन नबियों में से हर एक नबुव्वत करते वक़्त अपनी ख़्वाब से शर्मिन्दा होगा, और कभी धोखा देने के लिए कम्बल के कपड़े न पहनेगे,5बल्कि हर एक कहेगा, कि मैं नबी नहीं किसान हूँ, क्यूँकि मैं लड़कपन ही से गु़लाम रहा हूँ।'6और जब कोई उससे पूछेगा, कि तेरी छाती" पर यह ज़ख़्म कैसे हैं?" तो वह जवाब देगा यह वह ज़ख्म हैं जो मेरे दोस्तों के घर में लगे |7रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, "ऐ तलवार, तू मेरे चरवाहे, या'नी उस इन्सान पर जो मेरा रफ़ीक़ है बेदार हो। 'चरवाहे को मार कि ग़ल्ला तितर-बितर हो। जाए, और मैं छोटों पर हाथ चलाऊँगा।8और ख़ुदावन्द फ़रमाता है, सारे मुल्क में दो तिहाई क़त्ल किए जाएँगे और मरेंगे, लेकिन एक तिहाई बच रहेंगे।9और मैं इस तिहाई को आग में डालकर चाँदी की तरह साफ़ करूँगा और सोने की ताऊँगा। वह मुझ से दु'आ करेंगे, और मैं उनकी सुनूँगा। मैं कहूँगा, 'यह मेरे लोग हैं," और वह कहेंगे, 'ख़ुदावन्द ही हमारा ख़ुदा है।"

Chapter 14

1~देख, ख़ुदावन्द का दिन आता है, जब तेरा माल लूटकर तेरे अन्दर बाँटा जाएगा।2क्यूँकि मैं सब क़ौमों को जमा' करूँगा कि यरुशलीम से जंग करें, और शहर ले लिया जाएगा और घर लूटे जाएँगे और 'औरतें बे हुरमत की जायेंगी और आधा शहर ग़ुलामी में जाएगा, लेकिन बाक़ी लोग शहर ही में रहेंगे।3तब ख़ुदावन्द ख़ुरूज करेगा और उन क़ौमों से लड़ेगा, जैसे जंग के दिन लड़ा करता था।4और उस दिन वह को-हए-जै़तून पर जो यरुशलीम के पूरब में वाक़े' है खड़ा होगा और कोह-ए-ज़ैतून बीच से फट जाएगा; और उसके पूरब से पशचिम तक एक बड़ी वादी हो जाएगी, क्यूँकि आधा पहाड़ उत्तर को सरक जाएगा और आधा दक्खिन को।5और तुम मेरे पहाड़ों की वादी से होकर भागोगे, क्यूँकि पहाड़ों की वादी अज़ल तक होगी; जिस तरह तुम शाह-ए- यहूदाह उज़ियाह के दिनों में ज़लज़ले से भागे थे, उसी तरह भागोगे; क्यूँकि ख़ुदावन्द मेरा ख़ुदा आएगा और सब कु़दसी उसके साथ6और उस दिन रोशनी न होगी, और अजराम-ए-फ़लक छिप जाएँगे।7लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जो ख़ुदावन्द ही को मा'लूम है। वह न दिन होगा न रात, लेकिन शाम के वक़्त रोशनी होगी।8और उस दिन यरुशलीम से आब-ए- हयात जारी होगा, जिसका आधा बहर-ए- पूरब की तरफ़ बहेगा और आधा बहर-ए- पच्छिम की तरफ़, गमीं सदी में जारी रहेगा।9और ख़ुदावन्द सारी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन एक ही ख़ुदावन्द होगा, और उसका नाम वाहिद होगा।10~और यरुशलीम के दक्खिन में तमाम मुल्क जिबा' से रिम्मोन तक मैदान की तरह हो जाएगा। लेकिन यरुशलीम बुलन्द होगा, और बिनयमीन के फाटक से पहले फाटक के मक़ाम या'नी कोने के फाटक तक, और हननएल के बुर्ज से बादशाह के अंगूरी हौज़ों तक, अपने मक़ाम पर आबाद होगा।11और लोग इसमें सुकूनत करेंगे और फिर ला'नत मुतलक़ न होगी, बल्कि यरुशलीम ~अमन-ओ-अमान से आबाद रहेगा।12और ख़ुदावन्द यरुशलीम से जंग करने वाली सब क़ौमों पर यह 'अज़ाब नाज़िल करेगा, कि खड़े खड़े उनका गोश्त सूख जाएगा,और उनकी आँखे चश्म खानों में गल जायेंगी और उनकी ज़बान उनके मुँह में सड़ जाएगी।13और उस दिन ख़ुदावन्द की तरफ़ से उनके बीच बड़ी हलचल होगी और एक दूसरे का हाथ पकड़ेंगे और एक दूसरे के ख़िलाफ़ हाथ उठाएगा।14और यहूदाह भी यरुशलीम के पास लड़ेगा, और चारों तरफ़ की सब क़ौमों का माल या'नी सोना-चाँदी और पोशाक बड़ी कसरत से इकठ्ठा किया जाएगा।15और घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों, गधों और सब हैवानों पर भी जो उन लश्करगाहों में होंगे, वही 'अज़ाब नाज़िल होगा16~और यरुशलीम से लड़ने वाली क़ौमों में से जो बच रहेंगे, साल-ब-साल बादशाह रब्ब-उल-अफ़वाज को सिज्दा करने और 'ईद-ए-ख़ियाम मनाने को आएँगे।17और दुनिया के उन तमाम क़बाइल पर जो बादशाह रब्ब-उल-अफ़वाज के सामने सिज्दा करने को यरुशलीम में न आएँगे, मेंह न बरसेगा।18और अगर क़बाइल-ए-मिस्र जिन पर बारिश नहीं होती न आएँ, तो उन पर वही 'अज़ाब नाज़िल होगा जिसको ख़ुदावन्द उन गै़र-क़ौमों पर नाज़िल करेगा, जो 'ईद-ए-ख़ियाम मनाने को न आएँगी।19अहल-ए-मिस्र और उन सब क़ौमों की, जो ईद-ए-ख़ियाम मनाने की न जाएँ यही सज़ा होगी।20उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा, "ख़ुदावन्द के लिये पाक।” और ख़ुदावन्द के घर को देगें, मज़बह के प्यालों की तरह पाक ~होंगें।21बल्कि यरुशलीम और यहूदाह में की सब देगें, रब्ब-उल-अफ़वाज के लिए पाक होंगी, और सब ज़बीहे पेश करने वाले आयेंगे और उनको लेकर उनमें पकायेंगे और उस रोज़ फिर कोई कन'आनी रब्ब-उल-अफ़वाज के घर में न होगा।|